

पद १३८

(राग: काफी - ताल: त्रिताल)

करो कोई जप तप साधन । और कछु रामनाम सम नहीं ॥ध्रु. ॥
पूरब पश्चिम उत्तर दच्छिन । कोटि तीर्थ फिर आई ॥१॥ 'रा'
कहते रघुबीरा पहुँचे । 'म' मुक्ती भर पाई ॥२॥ मानिक कहे तुम्हारे
नाम प्रताप से । पत्थर सागरमांहि ॥३॥